

Newspaper Clips

October 4, 2016

Times Of India ND
04/10/2016 P-13

Norms to hire foreign faculty for IITs, IIMs may be eased

Akshaya.Mukul@timesgroup.com

New Delhi: Roadblocks in hiring foreign faculty on five-year contracts in government institutions like IITs and IIMs could soon be resolved as the home ministry told its HRD counterparts on Monday that it was proposing a Cabinet note to allow work visa to those who earn a minimum of \$15,000 a year.

At present, work visa is given only to those who earn a minimum of \$25,000 a year. This made it difficult for Indian higher educational institutions to hire foreign teachers at the entry level of assistant professor. The minimum salary norm was for all jobs and was not limited to teaching.

While the home ministry's assurance will help solve the problem of hiring foreign teachers to some extent, the HRD ministry is still worried. It wants to shorten the period of clearance from nearly six months to two or even less. The home and foreign ministries had suggested that clearance should be done by a board and could take six months. HRD ministry sources said this would not attract the best teachers.

In the meeting with officials of home and foreign ministries, the HRD ministry proposed that foreign applicants from countries that have been given most favoured nation (MFN) status should not go to the foreign ministry for political clearance. They should be allowed to straightaway apply to the home ministry for security clearance.

Sources said the HRD ministry also proposed that instead of going through clearances at the time of job application, it should be done at the time of granting work visa. "It could bring down the clearance time to eight weeks," a source said.

Hindustan Times ND 04/10/2016
P-15

Visa process for foreign faculty in IITs made easier

OPENING DOORS Move removes major obstacle in hiring overseas teaching talent

Neelam Pandey

neelam.pandey@hindustantimes.com

NEW DELHI: Foreign academicians who want to teach at the Indian Institutes of Technology (IITs) will no longer require prior clearance for acquiring visas, a condition that has been a major irritant in hiring overseas talent.

The existing regulatory regime calls for prior approvals from both the ministry of external affairs (MEA) and the ministry of home affairs (MHA), resulting in delays of six to 18 months. According to sources, this usually results in the foreign academician turning down the job offer.

"We have agreed that they need not procure prior political clearance, with the exception of a few cases," said a source.

Another major obstacle – an annual income threshold of approximately ₹16 lakh – is also likely to be relaxed, with the ministry mulling over bringing it down to ₹9.10 lakh for issuing work visas.

It was decided at an August meeting of the IIT council,

chaired by human resource development (HRD) minister Prakash Javadekar, that the authorities should identify potential candidates graduating from reputed international universities to work in Indian institutions. "The government wants to liberalise the existing regulatory regime for appointment of foreign faculty members. A few decisions to this effect were taken at a meeting called by the HRD ministry with the MEA and the MHA on Monday," the source said.

A decision was reportedly taken in principle to ease the existing framework for permitting foreign academicians to teach in India, a senior official said. "Once the proposal is approved by the cabinet, foreign faculty members will be incentivised to teach at IITs. They would be paid over the threshold limit," he added.

The IIT council has decided to systematically increase the number of foreign faculty members at IITs in the near future. "It's necessary to bring in necessary diversification of faculty, and cross-fertilisation of ideas," the official said.

Hindustan ND 04/10/2016 p-5

संयुक्त प्रवेश परीक्षा 12 फरवरी 2017 को आयोजित की जाएगी

आईआईटी जैम के लिए 6 तक आवेदन का मौका

अवसर

नई दिल्ली | वरिष्ठ संवाददाता

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) और भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईसी) के एमएससी, ज्वाइंट एमएससी-पीएचडी, एमएससी-एमटेक और अन्य स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए 12 फरवरी 2017 में आयोजित होने वाली संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जैम-2017) के लिए 6 अक्टूबर तक आवेदन किए जा सकते हैं। इस परीक्षा का आयोजन इस बार आईआईटी दिल्ली कर रहा है।

इस परीक्षा के लिए उम्मीदवारों को वेबसाइट www.jam.iitd.ac.in पर ऑनलाइन आवेदन करना होगा। उम्मीदवारों को पहले अपने नाम, ई-मेल आईडी, मोबाइल नंबर और पासवर्ड की सहायता से पंजीकरण करना होगा। इसके बाद उम्मीदवार को ई-मेल से पंजीकरण नंबर की जानकारी दी जाएगी।

पंजीकरण नंबर और पासवर्ड से उम्मीदवार पोर्टल पर फिर से लॉगइन कर अभिभावकों का नाम, मोबाइल नंबर, परीक्षा केंद्र के लिए शहर का चुनाव,



2,100 रुपये सामान्य और अन्य पिछड़ा वर्ग के उम्मीदवारों के लिए दोनों सत्र की परीक्षा फीस तथा एक सत्र की फीस 1500 रुपये

1,050 रुपये महिलाओं, एससी/एसटी और दिव्यांग श्रेणी के उम्मीदवारों के लिए दोनों सत्रों की परीक्षा फीस तथा एक सत्र के लिए फीस 750 रुपये

परीक्षा का आयोजन दो पालियों में किया जाएगा

अगले साल 12 फरवरी को होने वाली जैम परीक्षा दो सत्रों में आयोजित की जाएगी। पहले सत्र में सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक बायोलॉजिकल साइंस, गणित और भौतिक शास्त्र की परीक्षा होगी। वहीं, दूसरे सत्र में दोपहर 2 से शाम 5 बजे के बीच बायोटेक्नोलॉजी, रसायन शास्त्र, जियोलॉजी और मैथमेटिकल स्टैटिस्टिक्स की परीक्षा का आयोजन होगा। दोनों परीक्षाएं कंप्यूटर आधारित होगी।

जन्मतिथि, पत्र व्यवहार का पता, श्रेणी आदि की जानकारी देंगे। साथ में उन्हें डिग्री, अंक प्रतिशत, पहचान पत्र आदि की भी जानकारी पोर्टल पर देनी होगी। इसके बाद उम्मीदवार को फोटो, हस्ताक्षर और श्रेणी से संबंधित दस्तावेज अपलोड करने होंगे।

10 जनवरी से प्रवेश पत्र डाउनलोड करें : जैम-2017 के लिए उम्मीदवार अगले साल 10 जनवरी से प्रवेश पत्र

डाउनलोड कर सकेंगे। प्रवेश पत्र डाक से नहीं भेजे जाएंगे।

28 अक्टूबर तक श्रेणी में बदलाव किया जा सकता है : जिन उम्मीदवारों ने गलती से अपनी श्रेणी और लिंग गलत भर दिया है, वे 28 अक्टूबर तक इसमें संशोधन कर सकते हैं। इसके लिए आवेदन के साथ शुल्क का डिमांड ड्रफ्ट, जोकि 'चेयरमैन जैम आईआईटी दिल्ली' के नाम बनवाना होगा।

Hindustan ND
04/10/2016 p-11

संस्कृत की पढ़ाई आईआईटी में होगी

कानपुर आईआईटी कानपुर में पहली बार संस्कृत की पढ़ाई शुरू होने जा रही है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के आदेश पर आईआईटी प्रशासन ने इसकी तैयारी कर ली है। बुधवार को होने वाली सीनेट की बैठक में संस्कृत को ह्यूमिनिटीज विभाग में बतौर कोर्स शामिल किया जाएगा। इसमें छात्र-छात्राओं को रिसर्च करने का मौका भी मिलेगा। आईआईटी में पहले से ही संस्कृत पर काफी काम हो रहा है।

अभी तक आईआईटी में फ्रेंच, जर्मन और जापानी भाषा सिखाई जाती थी। पहली बार भारतीय भाषा के रूप में संस्कृत का कोर्स शुरू किया जा रहा है। इसमें छात्र-छात्राओं को तुलसी के पत्तों के गुण और वैदिक साइंस की जानकारी भी दी जाएगी। इसमें छात्र-छात्राओं को रिसर्च करने का मौका भी मिलेगा। आईआईटीयंस को भारतीय संस्कृति से लेकर अन्य जानकारी भी दी जाएगी। इससे छात्रों का बौद्धिक विकास भी होगा। आईआईटी के प्रवक्ता प्रोफेसर सुधीर मिश्रा ने बताया कि एमएचआरडी का पत्र आया है। (हिंदी)

Veerarjun ND 04.10.2016 P-2

आईआईटी खड़गपुर का वार्षिक प्रौद्योगिक प्रबंधन उत्सव 27 जनवरी से

वीर अर्जुन समाचार सेवा खड़गपुर। क्षितिज आईआईटी खड़गपुर का वार्षिक प्रौद्योगिक प्रबंधन उत्सव, अपनी अद्वितीय महिमा, बेजोड़ प्रतिभा और सर्वश्रेष्ठ ज्ञान से पूर्ण प्रतियोगिताओं के लिए लोकप्रिय है। इस साल यह 27 जनवरी से 29 जनवरी तक होगा। 2004 में स्थापित होने के बाद से ही क्षितिज निरंतर ऊंचाइयों को छूता जा रहा है और अभी एशिया का सबसे बड़ा प्रौद्योगिक प्रबंधन उत्सव है। क्षितिज का प्रभुत्व इसके यूनेस्को से प्राप्त संरक्षण से ही साबित होता है। इस उत्सव में संक्षेप में कहें तो प्रतियोगिताएं, अतिथि व्याख्यान, कार्यशालाएं और प्रदर्शनियां होती हैं। क्षितिज के पिछले संस्करणों पर नजर डालें तो इसकी प्रतियोगिताएं प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा प्रमाणित होती हैं जैसे ASME,

IMechE, IEEE, ACM आदि। साथ ही ऑनलाइन प्रतियोगिताएं भी होती हैं जो क्षितिज से काफी पहले शुरू हो जाती हैं। इनके साथ ही क्षितिज हर साल कई नामी हस्तियों को आमंत्रित करता है जो कि छात्रों के साथ अपनी उपलब्धियों और अनुभवों के बारे में बात करते हैं। पिछले सालों की ऐसी ही कुछ हस्तियां हैं श्री नवाजुद्दीन सिद्दिकी, श्री पीयूष मिश्रा, श्री जिम्मी वेल्स, श्री राकेश शर्मा इत्यादि। इसके अलावा मुफ्त कार्यशालाएं भी होती हैं जो कि बड़ी-बड़ी कंपनियों जैसे Google, Microsoft, Nvidia, CDAC, Intel, IBM, Mozilla, DRDO, Texas Instruments द्वारा आयोजित कराई जाती हैं और प्रमाणित भी होती हैं।

Business Line ND 04/10/2016

p-16

IIT-Kanpur's placement drive

Kanpur, October 3

The first round of the placement drive of IIT-Kanpur's 2016-17 academic session will begin here on December 1 and go up to December 22. Around 1,200 students have registered for the first round of the placement drive, university officials said. According to the placement cell sources, the first round will see around 300 foreign and Indian companies and public sector undertakings in the placement drive. The second phase will be between February and April 2017, they said. PTI

Business Standard ND 04/10/2016 P-1

A year on, IIM-Sambalpur toils without full-time faculty

Six new IIMs, announced in Budget 2014-15, started academic sessions last year. The first of a three-part series takes stock of IIM-Sambalpur

JAYAJIT DASH

Sambalpur (Odisha), 3 October

A year ago, when Amit Abegaonkar from Latur (Maharashtra) walked into the fledgling Indian Institute of Management (IIM), Sambalpur, his experience was barely fulfilling.

Getting into an IIM usually marks high career aspirations and raises the bar on all parameters — from academic rigour to infrastructure to exposure and placements. But despite the coveted IIM tag, the institute in Sambalpur is struggling to deliver on many of these aspects.

As of now, IIM-Sambalpur is running on the rented premises of Silicon Institute of Technology, a private engineering concern, at its Sason campus, some 35 km from Sambalpur, an industrial hub in Odisha's hinterland. IIM-Indore is assigned the task of mentoring IIM-Sambalpur.

A narrow, meandering road flanked by farms leads to this IIM with picturesque hills in the backdrop. "Initially, the institute was not up to the

expectations. Even bare minimum infrastructure like seamless internet connectivity was not in place. But I feel IIM-Sambalpur is slowly evolving and coming on its own," said Abegaonkar, a second year student of Post Graduate Programme (PGP).



THIRD
GENERATION
IIMs

IIM-Sambalpur, one of the six third-generation IIMs along with Visakhapatnam, Bodhgaya, Sirmour, Nagpur and Amritsar, was set up as per the announcement made in Budget 2014-15 to keep pace with the growing demand for good managers. Sambalpur (with no air connectivity), however, was not the initial choice of the Union Human Resource Development Ministry, which chose Bhubaneswar as the location for IIM in Odisha.

According to sources, the state government's choice for Sambalpur stemmed from political reasons. The state government said a neglected region in western Odisha was selected for the premier institute because it didn't want Bhubaneswar to become base of all important institutions. Turn to Page 16

Tomorrow: IIM-Bodh Gaya

IIM IN THE MAKING

THE INSTITUTE DOESN'T HAVE ITS OWN CAMPUS

NO PERMANENT FACULTY

AROUND 40 VISITING FACULTY/GUEST LECTURERS

94 PGP STUDENTS — 46 IN FIRST YEAR, 48 IN SECOND YEAR

THE FIRST BATCH GRADUATES IN 2017

THE INSTITUTE RECEIVED ₹10 CRORE SEED FUNDING FROM MHRD IN 2015

A year on, IIM-Sambalpur toils...

For IIM-Sambalpur, the lacuna is not limited to infrastructure alone. Even to this date, the institute is operating without a full-time director and does not have full-time faculty. "As of now, we have only visiting faculty but they are enough to cater to the academic rigour. The faculty is highly qualified and drawn mostly from IIM-Indore and other IIMs. We are also organising guest lectures where people from noted corporate houses deliver talks," said a student.

Management guru Biswajeet Pattanayak, who has taught at IIMs (Lucknow and Indore), said "To begin with, handholding approach is fine but if it continues for long, it is not in the interest of the students. Having a pool of full-time faculty is essential for holistic development of the new IIM. Management education is not just academics. It's also about grooming that goes beyond classroom teaching."

Pattanayak said there was wide disparity between the established IIMs and the newer ones on areas

such as quality, exposure, co-curricular activities and holistic development. "In my opinion, the new IIMs are finding it difficult to grow without any legacy. Industry connect is very important and this is normally done by a full-time director with his team of faculty, which, in turn, helps students to bag prized placements," said Pattanayak, founder director at Asian School of Business Management (ASBM) with campuses in Hyderabad and Bhubaneswar. "A person with an IIM background can be appointed as full-time director so that he can inculcate here the unique culture of IIMs."

IIM Sambalpur authorities are upbeat on the appointment of a dedicated director. "A full-time director is expected by end of this year. Then, the appointment of full-time faculty will take off. At present, we are focusing on academics. Add-ons like academic and industry collaborations will begin in due course," said Amruti Phalguni Mohanty, officer, IIM-S.

The heartening part is that the

institute has a pool of talented students geared up for critical management roles, said a member of the visiting faculty. "Having been associated with IIM-Sambalpur since its inception, I have observed the students and the college evolve wonderfully. The students here have developed exceptional abilities which enable them to distinguish themselves in the industry. I believe they possess the right mix of attitude and skills to excel," said Rohit Kapoor, professor (operations management & quantitative techniques), IIM-Indore.

For the permanent campus, 237-acre land has been identified by the Odisha government at Basantpur on the outskirts of Sambalpur. Construction is yet to commence and it may take three to four years for IIM-Sambalpur to get a building of its own.

As of now, the institute functions from a rented floor with three active classrooms. Students have access to library which is stocked with the latest journals and books. More than 40 visiting

faculty have been involved in classroom teaching. The maiden batch of PGP took off in 2015-16 with 48 students. "Initially, there were some hiccups but no student was transferred to any other IIM. The first batch has completed four terms in the course and the entire batch has secured 100 per cent summer placement," Mohanty said.

For summer placements, the IIM had 65 offers from 30 companies with ₹70,000 being the highest offer for the two-month period. However, not many recruiters are coming here because of the remote location. It means the placement cell run by the students has to go the extra mile to invite recruiters. For instance, most of the summer placements were sealed through interviews via video conferencing. The second batch of IIM-Sambalpur has been inducted with 46 students and their summer placement concerns have already kicked off the exercise for final placements of the maiden batch.

Tomorrow: IIM-Bodh Gaya

IITBombay's intellectual property rules similar to that of MIT

<http://paper.hindustantimes.com/epaper/viewer.aspx#>

MUMBAI: The Indian Institute of Technology Bombay (IITB) is known to have budding designers and innovators who have time and again proved their genius by coming up with novel products and product ideas. Keeping this in mind, the institute's inhouse magazine, Insight, has analysed the newly upgraded version of IITB 's Intellectual Property Rights (IPR) policy. In the article, the rules have been compared to the IPR policy at other universities, including other IITs as well as the Massachusetts Institute of Technology (MIT). One of the main rules is that any IP produced by IITB personnel (student/staff/research scholars/postdoctoral fellows) will be owned by the institute. "After putting the better half of one's academic time on inventing something that can generate revenue for them, students shouldn't think that the rule is unfair," said Tejas Srinivasan of Insight. While the IP policy is similar across IITs and MIT, royalty sharing models have differed, said students. In IITB and IITKanpur , the share depends on the revenue generated on the IP. One thing common in these institutes is that the copyright on a thesis is solely given to the author. Revenues earned will be shared with the inventor in a 70:30 ratio. "The policy has been designed keeping in mind the rules and regulations followed by other top universities," said a student. The article has also got views of some former students. "In terms of royalty charges, revenue distribution and exclusive licensing, the policy is student friendly. Filing a patent can be expensive and time consuming," said Ashray Malhotra, an IITB alumnus.

SBI signs MoU with IIT- Kharagpur for research and running proof of concepts

<http://www.medianama.com/2016/10/223-sbi-mou-iit-kharagpur/>

State Bank of India (SBI) has signed a memorandum of understanding (MoU) with IIT Kharagpur for collaborative research and running proof of concepts. SBI has a wider programme includes ideation, incubation, experimentation and commercialization of new technology driven products and services for the banking sector.

IIT Bombay has a similar MoU with SBI and had signed in July. Both parties will identify FinTech start-ups that have products or applications that cater to the financial sector. The bank will provide a platform for testing and piloting such products and check for any specific business linkages. Additionally, the lender said that it may invest in the startups and IIT Bombay's Society for Innovation and Entrepreneurship (SINE) will help in initial screening for technical competency, product road map and innovation subject.

Submission of MPhil and PhD Dissertation to INFLIBNET Online Depository made Mandatory by UGC

<http://www.enaindia.in/news/newsdetails/policy/regulatory-bodies/submission-of-mphil-and-phd-dissertation-to-inflibnet-online-depository-made-mandatory-by-ugc>

The University Grants Commission of India (UGC) has made it mandatory for universities and colleges across the country to submit an electronic copy of MPhil dissertation and PhD thesis of their students with the online depository named Information and Library Network Centre (INFLIBNET).

Once the dissertations and thesis are submitted to the INFLIBNET the same would be available and accessible for all the institutions or colleges in the country.

In the year 1991 INFLIBNET was set up at the campus of Gujarat University by the UGC and it is basically an autonomous inter-university centre. The objective with which the centre was set up in 1991 was to use the virtual network of people and resources in academic institutions to enable effective and efficient access to knowledge.

The officials of the UGC also expect that in the near future the INFLIBNET would also emerge as a source of revenue through the creation of robust network of virtual library by connecting all institutions providing a seamless, reliable and ubiquitous access to scholarly, peer-reviewed electronic resources to the academic community.